ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-5* August-2020
Anthology : The Research

किशोरों के लिए शिक्षक और अभिभावक की भूमिका

Role of Teacher and Parent For Adolescents

Paper Submission: 15/08/2020, Date of Acceptance: 27/08/2020, Date of Publication: 28/08/2020

गायत्री कुमारी
शोधार्थी
शिक्षाशास्त्र विभाग,
जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी,
जयपुर, राजस्थान, भारत

शुभा व्यास
प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र विभाग,
जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

किशोरावस्था में बच्चों के व्यक्तित्व का समुचित विकास करने के लिए माता–पिता एवं शिक्षकों द्वारा उनकी आवश्यकताओ और समस्याओं से परिचित होकर उनकी संतुष्टि और निराकरण के लिए विशेष प्रयत्न की आवश्यकता है। इस अवस्था में शोर– किशोरी बहुत संवेदनशील होते हैं। उनमें भय, प्रेम, चिंता, क्रोध, ईर्ष्या, आक्रोश इत्यादि संवेद बहुत तीव्र होते हैं। आत्मसम्मान की भावना बड़ी प्रबल होती है साथ ही भविष्य एवं केरियर को लेकर चिंतित रहते हैं । उनकी आवश्यकताओं, क्षमताओं एवं रुचियों के अनुसार प्रेरणा प्रदान करने तथा समुचित लक्ष्य के निर्धारण में माता–पिता एवं अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि इनके द्वारा दिया गया निर्देशन या मार्गदर्शन किशोरों के सर्वांगीण विकास करने में अहम भूमिका निभाता है।यह लेख शोध शीर्षक झारखण्ड के उच्चतर माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों के अभिभावक शैली का उनकी आक्रामकता एवं शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में अध्ययन का एक सारांश है।

For the proper development of the personality of children in adolescence, special efforts are needed by parents and teachers for their satisfaction and resolution after becoming aware of their needs and problems. In this stage, adolescents are very sensitive. In them, feelings of fear, love, anxiety, anger, jealousy, resentment, etc. Are very intense. The feeling of self-esteem is very strong and at the same time, we are worried about the future and career. Parents and teachers have an important role in providing motivation and setting appropriate goals according to their needs, abilities and interests, because the guidance provided by them plays an important role in the all round development of adolescents. A summary of the study of parental style of adolescent students of higher secondary level in Jharkhand in terms of their aggression and academic achievement.

मुख्य शब्द : शिक्षक की भूमिका, अभिभावक की भूमिका, पारिवारिक वातावरण का प्रभाव, किशोरों की रुचियां, समायोजन संबंधी परिस्थितियां। Teacher's Roles, Parent's Roles, Influence Of Family Environment, Teen's Interests, Adjustment Related Circumstances.

प्रस्तावना

बच्चों की जीवन शैली में बहुत परिवर्तन आ गया है। आज सभी नागरिक अपने तरीके से जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। इसमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप उन्हें अच्छा नहीं लगता है वे अपनी जिम्मेदारियों से दूर भागने का कोशिश करते हैं जिसका प्रतिकूल प्रभाव समाज एवं परिवार में पड़ता है। किशोरों की जीवन शैली को अभिभावकों एवं शिक्षकों का मार्गदर्शन प्रभावित करता है। आज की युवा पीढ़ी को परिवार, समाज एवं राष्ट्र के प्रति, एवं उनके दायित्वों के प्रति जागरूक करना होगा। आज के विद्यार्थी मेधावी हैं, परंतु संस्कारों की कमी है जिसके कारण उठना, बैठना, बोलना, बड़ों का आदर, सत्कार, माता–पिता, गुरुजनों को उचित सम्मान नहीं देते इसका कारण अभिभावकों के पास समय अभाव एवं संयुक्त परिवार का कम होना है। सभी माता–पिता अपने बच्चों से यह उम्मीद करते हैं कि उनका बच्चा अच्छी शिक्षा प्राप्त करें, शिक्षक अच्छे संस्कारों से परिचित करायें। परंतु आज का शिक्षक एवं छात्र परीक्षा में बेहतर अंकों के लिए व्यस्त हैं। उनका लक्ष्य केवल सर्वाधिक अंक प्राप्त करना है। जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास नहीं हो पा रहा है। अभिभावकों का शिक्षक पर भरोसा कम हो गया है। पहले शिक्षक को बच्चों का

शुभचिंतक माना जाता था उनकी हर बातों को विश्वास किया जाता था ।विद्यालय में बच्चों को जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करना होगा। शिक्षकों को छात्रों के सम्मुख आदर्श व्यक्तित्व को प्रस्तुत करना होगा क्योंकि वे शिक्षकों द्वारा किए गए व्यवहार का अनुसरण करते हैं।

1. आज बढ़ती तकनीकों के कारण विद्यार्थी टी.वी. ,मोबाइल, इंटरनेट पर अपना अधिकांश समय व्यतीत करते हैं जिससे अवसाद, चिड़चिड़ापन, स्वमंत्र मुग्ध रहने की आदत का निर्माण हो रहा है अतः खाली समय में तकनीकी का उचित उपयोग करने में अभिभावकों की मार्गदर्शन की आवश्यकता है।
2. आज परिवार छोटे होते जा रहे हैं, माता–पिता अपने बच्चों को सुख– सुविधा तो उपलब्ध करा रहे हैं परंतु समय नहीं दे रहे हैं। अतः बच्चों में संवेदनहीनता, अकेलापन एवं अनुशासनहीनता की भावना का विकास हो रहा है। ऐसी परिस्थितियों का सामना करने के लिए अभिभावकों का सहयोग जरूरी है।

जहां बालकों में भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अपराध प्रवृत्ति का विकास हो रहा है वहीं धैर्य एवं साहस के अभाव में आत्महत्या करने जैसे जोखिम का भी प्रचलन बढ़ रहा है। ऐसी परिस्थितियों से लड़ने हेतु माता–पिता एवं शिक्षकों का सही मार्गदर्शन ही मदद करता है। विद्यालय में छात्रों को विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से जिम्मेदारियां दी जाती हैं जिससे वे अपने कर्तव्यों को समझें। सभी माता–पिता एवं शिक्षकों का कर्तव्य है कि बच्चों को एक सभ्य नागरिक बनाने का प्रयास करें, उन्हें अनुशासन , प्रेम एवं वात्सल्य का ज्ञान दें। बच्चे माता पिता एवं शिक्षकों के दिए हुए गुणों से आवेष्ठित होकर ही अच्छे इंसान बन पाते हैं अर्थात इनकी भूमिका बच्चे के हितैषी, सलाहकार और मार्गदर्शक की होती है।माता पिता और अध्यापकों का एक ही लक्ष्य है – ऐसे युवा बनाना जो आगे चलकर प्रौढ़ और संतुलित व्यस्क बने, जीवन का आनंद लें और जिस समाज वे में रहते हैं, उसमें अपनी जगह बनाने में समर्थ हो। किशोरावस्था में बच्चों के व्यक्तित्व का समुचित विकास करने के लिए यह आवश्यक है कि उनकी आवश्यकताओं और समस्याओं से परिचित होकर उनकी संतुष्टि और निराकरण के लिए यथासंभव प्रयत्न किए जाए। इसके लिए शिक्षकों तथा माता–पिता की ओर से विशेष प्रयत्न करने की आवश्यकता है। क्या किया जाए, इसके कुछ निम्न सुझाव उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं–

किशोर मनोविज्ञान का समुचित ज्ञान

किशोरों के व्यवहार को ठीक प्रकार से समझने के लिए किशोर मनोविज्ञान का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। अभिभावको एवं शिक्षकों को उनकी आवश्यकताओं , वृद्धि और विकास के विभिन्न पहलुओं तथा उनके द्वारा अनुभव की जाने वाली कठिनाईयों एवं समस्याओं का ज्ञान होना भी आवश्यक है तभी वे उनके उचित विकास और समायोजन में पूरी–पूरी सहायता कर सकने में सक्षम हो सकते है। किशोर क्या चाहते हैं, उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए तथाकिस प्रकार उन्हें भ्रांतियों, मानसिक तनावों , कुंठाओं, चिंताओं और विकारों का शिकार होने से बचाया जा सकता है।

समुचित वृद्धि एवं विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करना

किशोरावस्था वृद्धि के दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण अवस्था है। समुचित रूप से अधिक वृद्धि हो सके, इसके लिए माता–पिता और अध्यापकों द्वारा घर और स्कूल दोनों में ही किशोरों को पर्याप्त सुविधाएं और अवसर देना अत्यंत आवश्यक है। किशोरों को संतुलित आहार मिलना चाहिए। उनमें खान–पान की अच्छी आदतें विकसित होनी चाहिए। स्वस्थ कैसे रहे, बीमारियों से कैसे बचे आदि महत्वपूर्ण तथ्यों से भी उन्हें परिचित कराया जाना चाहिए। उन्हें व्यायाम तथा खेलकूद के भी पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। किशोरों को मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ रखने के लिए सभी आवश्यक सावधानी बरतनी चाहिए तथा उनको अपनी मानसिक शक्तियों के समुचित विकास के लिए भी पर्याप्त सुविधाएं और अवसर दिए जाने चाहिए।

उचित शिक्षा प्रदान करना

इस अवस्था में मासिक धर्म, स्वप्नदोष, समलैंगिक और विषम लैंगिक संबंधों के रूप में किशोर प्रायः कई तरह की समस्याओं, मानसिक तनावों, संघर्षों और ग्रंथियों में उलझ जाते हैं। अतः किशोरों की किसी न किसी रूप में समुचित यौन शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए।

किशोरों के साथ उचित व्यवहार करना

किशोर बहुत भावुक और संवेदनशील होते है। हमारे द्वारा अनजाने में भी किया गया मामूली सा गलत व्यवहार उसके लिए बहुत घातक सिद्ध हो सकता है। नई पीढ़ी क्या चाहती है और समय की मांग किया है, इस आधार पर हमें उचित मार्गदर्शन देनी चाहिए।अपनी इच्छाओं, मान्यताओं और आदर्शों को उनके ऊपर नहीं थोपना चाहिए। अतः माता–पिता तथा अध्यापकों को अपने और उनके बीच जो पीढ़ियों का अंतर है, उसे समझने की चेष्टा करनी चाहिए। किशोरों को आलोचकों की आवश्यकता नहीं, बल्कि ऐसे आदर्श व्यक्तियों की आवश्यकता है जिनके व्यवहार का वे अनुसरण कर सके। उन्हें ऐसी माता–पिता और अध्यापकों की आवश्यकता है जो उनकी आवश्यकताओं और समस्याओं पर ध्यान दे सके तथा उनके आत्म–सम्मान एवं स्वतंत्र दृष्टिकोण की यथासंभव रक्षा करते हुए उन्हें पूरा–पूरा स्नेह दे सके और पथ प्रदर्शन कर सके।

सवेगों को प्रशिक्षण और संवेगात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति

किशोरों में संवेगों का वेग बहुत अधिक प्रबल होता है। इस दृष्टिकोण से किशोरों की संवेगात्मक शक्तियों को रचनात्मक मोड़ दिया जाना अति आवश्यक हो जाता है। इसके अतिरिक्त किशोरों की संवेगात्मक आवश्यकतओं की पूर्ति भी आवश्यक होती हैद्य अतः माता–पिता और गुरुजनों द्वारा किशोरों को अपने मित्र मंडली में भली–भांति आत्मसात होने में पूरी–पूरी सहायता करनी चाहिये। उन्हें बड़ो तथा अपनी उम्र के साथियों के उचित प्रशंसा और प्रतिष्ठा प्राप्त होने के लिए अनुकूल अवसर प्रदान किए जाने चाहिए तथा अपनी

आवश्यकतानुसार उचित स्वतंत्रता, सुरक्षा ,प्रोत्साहन और स्नेह मिलने चाहिये।

किशोरों की विभिन्न रुचियों की पूर्ति करना

किशोरों की रुचि और अभिरुचि के अनुकूल कार्य करने के अवसर देकर उन्हें भली–भांति विकास के पथ पर अग्रसर किया जा सकता है। उनके आदर्शों और मानवतावादी दृष्टिकोण को समाज सेवा और राष्ट्रीय कार्यों में अच्छी तरह उपयोग में लाया जा सकता है।

धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा प्रदान करना

किशोरों की बढ़ती हुई अनुशासनहीनता, चरित्र हीनता , बेचौनी और विध्वंसकारी प्रवृत्ति के मूल में एक बड़ा कारण यह भी है कि उन्हें किसी प्रकार की धार्मिक और नैतिक शिक्षा प्रदान नहीं की जाती। धार्मिक शिक्षा के रूप में किशोरों को अपना चरित्र ऊंचा उठाने की शिक्षा अवश्य प्रदान की जानी चाहिये। उन्हें धार्मिक संस्कारों और रीति–रिवाजों की भंवर जाल से मुक्त कर आदर्शों को ग्रहण करने तथा चरित्र संबंधी अच्छाइयों से मुक्त होने में भरपूर सहायता मिलनी चाहिये। संत और महापुरुषों के आदर्श आचरण उनके सामने रखकर उन्हें बताये गए मार्ग पर चलने के लिए भली–भांति प्रेरित किया जा सकता है। परंतु यह सब लाभ तभी उठाया जा सकता है जबकि माता–पिता तथा गुरुजन आदि अपने स्वयं के आचरण और व्यवहार द्वारा नैतिकता तथा चरित्र संपन्नता के उपयुक्त उदाहरण प्रस्तुत करें । अतएव माता–पिता एवं अध्यापकों को इस दिशा में समुचित प्रयत्न करना चाहिए।

व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करना

किशोर पूरी तरह से स्वतंत्र होना चाहते हैं, परंतु इस मार्ग में खाने–पीने और अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक धन संबंधी कठिनाई सामने आ जाती है। अतः प्रत्येक किशोर आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनने की कामना लिए होते है। उनका भविष्य में क्या व्यवसाय होगा, वे किस तरह अपनी रोजी रोटी कमा सकेंगें , इस तरह के प्रश्न उनके मस्तिष्क में मंडराते रहते हैं। ऐसी अवस्था में उन्हें पर्याप्त व्यवसायिक निर्देशन और उचित व्यवसायिक शिक्षा की आवश्यकता होती है। आज युवकों में जो निराशा और उद्देश्यहीनता की लहर व्याप्त है , उसके मूल में व्यवसायिक शिक्षा और निर्देशन की कमी स्पष्ट दिखाई देती है। शिक्षा प्राप्त करने में एड़ी–चोटी का पसीना बहाने के बाद भी वे अपने आपको अपनी आजीविका कमाने में असमर्थ पाते हैं। अतः शिक्षा को प्रत्येक अवस्था और व्यवस्था में उद्योग – धंधों से जोड़ने का प्रयत्न किया जाना चाहिये।

मार्गदर्शन और परामर्श सेवाओं की व्यवस्था

किशोरों की स्वयं अपनी बहुत समस्याएं होती हैं जिन्हें सुलझाने के लिए उन्हें समुचित सहायता की आवश्यकता होती है। अतः माता–पिता एवं शिक्षकों द्वारा इसके लिए प्रयास किया जा सकता है।

उद्देश्य

1. किशोरों के सर्वांगीण विकास में पारिवारिक वातावरण के प्रभाव की चर्चा करना।
2. किशोरों के सर्वांगीण विकास में अभिभावक की भूमिका स्पष्ट करना।
3. किशोरों के सर्वांगीण विकास में शिक्षक की भूमिका स्पष्ट करना।
4. किशोरों को भावी जीवन के लिए तैयार करने में अभिभावक / शिक्षक की उत्तरदायित्व को स्पष्ट करना।
5. किशोरों के नैतिक चारित्रिक एवं मानवीय मूल्यों के विकास में अभिभावक/ शिक्षक की भूमिका स्पष्ट करना।

निष्कर्ष

सभी किशोरों की अपनी–अपनी प्रकृति विशेष और परिस्थितियों के अनुसार अलग–अलग समस्याएं होती हैं। अतः उनकी आवश्यकताओं और समस्याओं से निपटने के लिए कोई सामान्य नियम और सिद्धांत नहीं बनाए जा सकते। ऐसी अवस्था में व्यक्तिगत रूप से ध्यान देकर उचित मार्गदर्शन प्रदान कर उनकी समस्याओं को सुलझाने में सहायता कर सकते हैं। अतः किशोर लड़के और लड़कियों को अच्छी तरह समझ कर तथा उनका विश्वास प्राप्त कर उचित मार्ग निर्देशन के लिए पूरे–पूरे प्रयत्न किए जाते रहने चाहिये। अतः माता–पिता और अध्यापकों द्वारा किशोरों को सभी प्रकार से ऐसी शिक्षा तथा समायोजन संबंधी परिस्थितियां प्रदान करनी चाहिए जिनसे उनका अधिक से अधिक सर्वांगीण विकास हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *अडेनियी. (2008). फाइव वेरिएबल्स एस प्रेडिक्टर ऑफ अकादमिक अचीवेमेंट अमंग स्कूल गोइंग एडोलैसैट्स पर्सपेक्टिव इन एजुकेशन. बडोदा, 24(2),113–120.*
2. *उवाइफो, वी. ओ. (2008).द इफेक्ट्स ऑफ फैमिली स्ट्रक्चर एंड पेरेंटहुड ऑन द अकादमिक परफॉरमेंस ऑफ नाइजीरिया यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स. स्टडीज इन होम कम्युनिकेशन साइंस 2(2),121–124.*
3. *जुयाल, एस., एल, गौर,वी.(2007) . फैमिली स्ट्रक्चर एंड जेंडर एज कोरिलेटस ऑफ मैरिटल एडजस्टमेंट एंड मेंटल हेल्थ ऑफ द मैरिड कपल. बिहेविरियल साइंटिस्ट, 8–93–100.*
4. *आरती, सी.,रत्ना, प्रभा.(2005). इन्फ्लुएंस ऑफ सिलेक्टेड फैमिली वेरिएबल्स ऑन फैमिली एनवायरनमेंट ऑफ एडोलैसैट्स. जर्नल ऑफ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च. 22(2),176–184.*
5. *वेबस्टर डिक्शनरी.(2004).द न्यू इंटरनेशनल वेबस्टर कंप्रहेंसिव डिक्शनरी,247. ट्रिडेंट प्रेस इंटरनेशनल,यू. एस.ए.*
6. *शर्मा,एस.,निधि,(2002). ए स्टडी ऑफ द इफेक्ट ऑफ पैरेंटल इन्वौलमेंट एंड एस्पेरिसन एकेडेमिक अचीवेमेंट ऑफ 2 स्टूडेंट्स. डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन ,पंजाब यूनिवर्सिटी*
7. *चेरियन,एम.सी., मलेहस .(1998) . रिलेशनशिप बिटवीन फैमिली इनकम एंडअचीवमेंट इन इंग्लिश ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम सिंगल एंड टू पेरेंट्स फैमिली. साइकोलॉजिकल रिपोर्ट्स 83 , 431–434.*
8. *Sharma, S (2017)- Social networking addiction and academic self & concept, P: ISSN NO-: 2394-0344, E: ISSN No-: 2455-0817 RNI No-UPBIL/2016/67980, VOL-2 ISSUE-1 Remarking An Analisation*
9. *Sharma, S (2018)- Developmental perspectives on identity its nature and formation, P: ISSN No.: 2321-290X, E:ISSN NO-: 2349-980X, RNI: UPBIL/2013/55327 VOL&6 ISSUE-(Part-1) Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika*
10. *Sharma] S ¼2019½- Role of education and socio&cultural change of girls of haryana] P: ISSN NO-: 2321-290X, E: ISSN NO-: 2349&980X RNI: UPBIL/2013/55327 Volume-6, Issue Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika-*